|::/\::| हंसलो मित्र कोनी थारो ए भोली काया |::/\::|

हंसलो मित्र कोनी थारो ए, भोली काया हंसलो मित्र कोणी थारो ए
तू जाने काया में ठग राख्यो, हंसलो आप ठागोरो ए
भोली का हंसलो मित्र कोणी थारो ए.....

अमर लोक से आयो म्हारो हंसलो, आयो अखन कंवारो ए |
ई हंसले ने ब्याव रचायो, यो ही है पीव तिहारो ए भोली काया ||

काढ र ल्याई कढाकर ल्याई में तो, फिर फिर ल्याई उधारो ए |
ई हंसले ने में तो भूखो कोणी राख्यो, सूंप दियो घर सरो ए भोली काया ||

जळ गया तेल या बुझ गई बाती, मंदिर भयो अंधियारों ए |
ले दिवलो में तो घर घर डोली, मिल्यो कोनी तेल उधारो ए भोली काया ||

दोय दिन नहीं तो यो च्यार दिन को पावणों, यो लाद चल्यो बिनजारो ए |
तू कहवे तो हंसला संग चलूँगा, छोड़ चल्यो मझधारो ए भोली काया ||

खिंड गई इट बिखर गयो चेजो, माटी में मिल गयो गारो ये |
कहत कबीर सुणो भाई साधो, निकल गयो चेजारो ए भोली काया ||

जय श्री नाथजी की....